P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III * Issue-XII*August-2016

खादी और आर्थिक स्वावलंबन : महात्मा गाँधी की दृष्टि में

अंकिता शर्मा
शोध छात्रा,
इतिहास अध्ययन शाला,
पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि.
रायपुर, छ.ग.

आभा रूपेन्द्र पाल
विभागाध्यक्ष,
इतिहास अध्ययन शाला,
पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि.
रायपुर, छ.ग.

सारांश

भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना और इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति के परिणाम स्वरूप हाथकरघा उद्योग सीमित हो गया और पहले जो खादी उद्योग समृद्ध था वह पूर्णतः सिमट गया। भारत के कई लोग और परिवार जो वस्त्र उद्योग से जुडे थे वे बेरोजगार हो गए। इसका प्रभाव भारत की आर्थिक स्थिति पर भी पडा। इन्ही कारणों से गांधी जी ने उस पुराने उद्योग को स्थापित करने का प्रयास किया। गांधी जी ने इसे विस्तारित कर स्वाधीनता आंदोलन से जोडा अर्थात विदेशी वस्त्र बहिष्कार के साथ स्वदेशी वस्त्र के प्रयोग हेतु खादी को अपनाने का लोगो से आव्हान किया जिससे एक ओर तो लोगो को रोजगार मिले व देश का धन देश में ही रहे। दूसरी ओर हम विदेशी वस्त्र का बहिष्कार कर ब्रिटिश सरकार का विरोध कर सके और उनके उद्योग को हानि पहुंचा सके। महिलाए भी इस उद्योग को अपनाकर आत्मनिर्भर हुई। कांग्रेस ने भी इस उद्योग को बढाने में मदद की। जिससे चरखा समृद्धि का पर्याय बन गया।

मुख्य शब्द : श्रम संग्रह, पराधीनता, खद्दर, श्रम साध्य, मोटा सूत, कामधेनु, वस्त्रहीनता का अभिशाप, नौसिखिये कतैयों, सतत् फलदायी।

प्रस्तावना

महात्मा गांधी की संसार को दो महत्वपूर्ण देन हैं, एक अहिंसा और दूसरा खादी। अहिंसा यदि आत्मा है तो खादी उसका शरीर हैं। अहिंसा की जो भावना हमारे अंदर हैं उसे यदि सामाजिक रूप में हमें प्रकट करना है तो हम खादी के रूप में जितनी अच्छी तरह प्रकट कर सकते हैं, उतनी दूसरी तरह नहीं। प्राचीन काल से ही भारतवर्ष के आर्थिक ढ़ाचे में चरखे व खादी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है साथ ही खादी वस्त्र की न केवल भारत वरन् विश्व के अन्य देशों में भारी मांग थी तथा यह उद्योग समृद्ध था। जो कि मध्यकाल तक फलता फूलता रहा। परंतु आधुनिक काल में ब्रिटिश शासन की नीतियों के परिणामस्वरूप यह उद्योग नष्टप्राय होने लगा।[1] गांधी जी इस उद्योग को पुनर्जीवित करना चाहते थे, उनका कहना था कि मुझे इस बात में जरा भी संदेह नहीं कि हमारे हिन्दुस्तान जैसे देश में, जहां लाखों आदमी बेरोजगार हैं। वहां लोग ईमानदारी से अपनी जीविका चला सके इस हेतु उन्हे किसी न किसी कार्य में लगाए रखना जरूरी हैं। इसका एक प्रमुख उपाय खादी उद्योग हैं।

खादी वृत्ति का अर्थ हैं, जीवन के लिए जरूरी चीजों की उत्पत्ति और उनके बंटवारें का विकेन्द्रीकरण।[2] खादी के लिए न तो बहुत पूंजी, न बहुत श्रम संग्रह की जरूरत हैं। 'खादी' थोड़े रूपये में, थोड़े साधनों में थोड़ी जगह में बन सकती है और मेहनत और मजदूरी का बंटवारा ऐसे स्वाभाविक काम से और न्यायपूर्वक हो जाता हैं कि किसी को किसी का शोषण करने की सहसा गुंजाइश नहीं रह जाती। यदि खादी की व्याख्या कपड़े तक सीमित न रखकर तमाम हाथ से बनी चीजों तक मान ली जाएं तो आर्थिक शोषण का प्रश्न बहुत आसानी से हल हो सकता है। क्योंकि खादी से तात्पर्य हाथ–परिश्रम से तैयार किये माल को इस्तेमाल करना हैं। मशीन से माल तैयार करने की भावना की जड़ में धन संग्रह की लालसा के सिवा और कुछ नहीं है। अगर जनता की या बनाने वाले की सुख–सुविधा की ही भावना उसमें हो तो वह 'खादी' और 'खादी' के उसूल से ही पूरी हो सकती है, मशीन और मशीन के उसूल से किसी प्रकार नहीं।[3]

अपनी आत्मकथा में गांधी जी लिखते हैं कि '1908 तक मैंने चरखा या करघा नहीं देखा था जब सन् 1915 में दक्षिण अफ्रीका से देश वापस आया, तब भी मैंने चरखे के दर्शन नहीं कियें थे। आश्रम के खुलने पर उसमें करघा शुरू किया। हमने समझ लिया था कि जब तक हम हाथ से

काटेगें नहीं, तब तक हमारी पराधीनता बनी रहेगी। वे लिखते हैं कि अब तक उन्हें कहीं चरखा नही मिला और न चरखा चलाने वाला। सन् 1917 में उन्होनें अपना दुख एक साहसी विधवा बहन गंगाबाई के सामने रखा। उन्हें गुजरात में काफी भटकने के बाद गायकवाड़ के बीजापुर गाँव में चरखा मिला। तब सूत तेजी से तैयार होने लगा।[4]

गाँधी जी ने हरिजन में लिखा है कि हम लोगों में यदि खादी के प्रति श्रद्धा होगी तो हम एक दिन पायेंगे कि सुदूर पूर्व से आने वाले कपड़ो के टुकड़े बेचने वाले लोग जिन करोड़ो ग्राहकों को ये टुकड़े बेचते हैं उन्हीं करोड़ो को हम खादी बेच सकते हैं।[5] प्रत्येक स्त्री अपने खाली समय में सूत कातना अपना धर्म समझे तो जनता को सूत रूई के दाम पड़े।[6]

गाँधी जी लिखते हैं, कि जब भारत में बाहर से आयात होने वाले सूती कपड़ो पर कर लगाया गया तब सिर्फ लंका शायर के हित के लिए भारत के बने कपड़े पर उत्पादन कर लगा दिया गया। यह कर हमें निरंतर इस बात की याद दिलाता हैं कि भारत का हित इंग्लैड के हित के अधीन हैं। भारत को आर्थिक रुप से एक स्वाधीन राष्ट्र बनाना हो, किसानो को यदि शोषण से बचाना हो तो यह अत्यावश्यक हैं कि विदेशी कपड़ो व अन्य विदेशी वस्तुओ का बहिष्कार कर हम अपने देश के कपड़ा उद्योग की रक्षा करे। इसी तरह हमें देशी मिलों के मुकाबले हमें हाथ कती खादी की रक्षा करनी चाहिए।[7]

खादी बनाम खद्दर

खादी से तात्पर्य सूती वस्त्र से हैं। व खद्दर से तात्पर्य मोटे सूती वस्त्र से हैं। इन वस्त्रों का निर्माण, कपास से सूत कात कर उस सूत से किया जाता था। एक प्रश्न यह उठता हैं कि वस्त्र के श्रेत्र में आत्मनिर्भरता हेतु गाँधी जी ने खादी को ही क्यो चुना ? इसका कारण यह था कि तत्कालिन समय में पूरे भारत में लगभग हर जगह कपास का उत्पादन होता था इसलिए गाँधी जी ने वस्त्रों के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हेतु खादी को चुना था। भारत में कुछ स्थानों पर ही कपास का रेशा लंबा होता था जिससे पतला सूत काता जा सकता था तथा उस महीन सूत से बने वस्त्र भी पतले व सुंदर बनावट के होते थे परंतु गाँधी जी हर व्यक्ति को वस्त्र उत्पादन के कार्य से जोडना चाहते थे इसलिए उन्होने खद्दर को बनाने व अपनाने का आव्हान किया। जिससे प्रत्येक व्यक्ति को इस उघोग से जुड कर रोजगार मिल सकें क्योकि हमारे देश में जिस कपास का उत्पादन होता हैं उसका रेशा हमारे देश के हर क्षेत्र में ज्यादा लंबा नहीं होता जिसके कारण उस कपास से मोटा सूत कतता हैं जिससे उसमें गठान आने से मोटा खद्दर तैयार होता था।

अखिल भारतीय चरखा संघ का अपना अनुभव हैं कि महीन खादी का उत्पादन श्रम साध्य हैं व इसके निर्माण हेतु प्रशिक्षण देना अत्यंत आवश्यक हैं जिसके लिए बहुत अधिक समय की आवश्यकता होगी। महिलाए आमतौर पर मोटे किस्म का सुत आसानी से कात सकती हैं, लेकिन उनको महीन सूत कातना सिखाने में समय लगेगा। यह उनको धीरे–धीरे ही आयेगा। इस हेतु उनको धैर्यपूर्वक प्रशिक्षित करना होगा। गांधी जी लिखते हैं कि खादी की गुणवत्ता पिछले सात वर्षो में बढी हैं लेकिन खादी की मांग अनिवार्य और सुनिश्चित बन जाने पर महीन किस्म की खादी से उसकी पूर्ति कर पाना संभव न होगा लेकिन फिर भी हमें भरोसा हैं कि वैसा अवसर आने पर लोग अपने जोश में अपने देश के लिए मोटी खादी के खुरदुरेपन को भी बर्दाश्त कर लेंगे और मोटी या महीन जैसी भी खादी हो पाकर खुश होंगे।[8]

खादी महीन होती थी इसलिए गांधी जी खद्दर के प्रयोग हेतु ज्यादा प्रोत्साहित करते थे ताकि यह ज्यादा दिन तक प्रयोग की जा सके जबकि खादी का कपडा पतला होने से जल्दी फट सकता था चूकि भारत के लोगों की स्थिति भी उस समय इतनी अच्छी नहीं थी कि वे बार–बार कपड़े खरीद कर पहन सके इसलिए उनके लिए खद्दर ज्यादा सही था और खादी की अपेक्षा सस्ता होने के साथ ही खद्दर उपलब्धता में भी उससे अधिक था।

खादी, आत्मनिर्भरता का साधन

गाँधी जी के अनुसार, खादी का परित्याग करना भारत की आत्मा को बेच देना है।[9] गाँधी जी के शब्दों में चरखा जन–साधारण की आशाओं का प्रतिनिधित्व करता है। चरखा गरीबो व किसानो के लिए खेती का पूरक धंधा था, विधवाओं का यह बंधु और सहारा था। ग्रामीणो को यह बेरोजगारी से भी बचाता था, क्योंकि इसमें कपास से रूई तथा बिनौलों को अलग करना, रूई की धुनाई, कताई, रंगाई, बुनाई आदि अगले–पिछले सभी उद्योग शामिल थे। गाँव के बढ़ई और लोहार भी इसके कारण काम में लगे रहते थे। चरखे से सात लाख गांव आत्म–निर्भर बने हुए थे। चरखे के जाने से तेल निकालने जैसे अन्य ग्रामीण उद्योग भी नष्ट हो गये। इन उद्योगों का स्थान किन्हीं नये उद्योगों ने नहीं लिया इसलिए गाँव वाले अपने विविध धंधों से वंचित हो गये और अपनी उत्पादक बुद्धि को तथा जो थोड़ी–बहुत संपत्ति उन धंधों से मिल सकती थी उसको भी खो बैठे।[7] बेशक, हर एक शहर, हर एक गाँव, हर एक कस्बे के लिए आदर्श तो यही है कि वह खुद अपने लिए काते और बुने।[10] इसलिए भारत वासियों को अगर आत्म निर्भर बनना है, तो सबसे स्वाभाविक बात यही हो सकती है कि चरखे का और उससे संबंधित सब उद्योगों का पुनरूद्धार किया जायें।

खादी बेरोजगारी मिटाने की रामबाण औषधि है। यही कारण है कि गाँधी चरखे को ''कामधेनु'' कहा करते थे तथा निर्धनताग्रस्त भारत के लिए खादी गाँधी की अर्थव्यवस्था में केन्द्रीय स्थान रखती है।[11]

जवाहर लाल नेहरू ने गाँधी जी के ग्रामोद्योग संबंधी विचार के बारे में लिखा है, कि गाँधी जी ने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर चरखा और ग्रामोद्योग की योजना बनाई थीं। अगर देश के अनगिनत बेकारों और अर्द्धबेकारों को फौरन राहत पहुँचानी थी, अगर उस सड़न को, जो सारे देश में फैलती जा रही थीं और जन–साधारण को पंगु बनाती जा रही थी, दूर

करना था अगर गांववालों के जीवनशैली को सामूहिक रूप से थोड़ा बहुत भी ऊपर उठाना था, अगर उन्हें आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाना था और अगर यह सब काम बिना पूंजी के होना था तो कोई दूसरा रास्ता नहीं दिखाई देता था।[12]

महिलाओं की आत्मनिर्भरता

गाँधी जी 16 जनवरी 1925 को सोजित्रा की महिला परिषद में भाषण देते हुए कहते हैं कि जब तक भारत की स्त्रियॉ सार्वजनिक जीवन में भाग नहीं लेगी। तब तक हिंदुस्तान का उद्धार नहीं हो सकता। भारत में स्वराज्य नहीं आ सकता। यहॉ वे महिलाओं को चरखा कातने व खादी पहनने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं कि ऐसा करने से वस्त्रहीनता का अभिशाप (जो कई गरीब बहनों में दिखाई देता है।) दूर होगा, हमारा देश संपन्न होगा, साथ ही इस कार्य के द्वारा महिलाए सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करेगी, आत्मनिर्भर होगी, जनता की सेवा कर पाएंगी, जो एक सच्ची देशभक्ति होगी।[13]

इसी प्रकार सोजित्रा की एक अन्य सभा में लोगो में देशभक्ति की भावना की प्रसार करते हुए वे कहते हैं, 'आप लोगो को खादी पहनना व सूत कातना चाहिए अपने आप को एक छोटे क्षेत्र का निवासी न मानकर स्वयं को एक बहुत बडे देश का निवासी मानिए इस बडे देश में रहने वाले सभी व्यक्ति आपके भाई–बहन हैं।'[14] ऐसा कहते हुए वे लोगो में आत्मनिर्भरता, देशभक्ति व एकता की भावना भरते हैं।

गाँधी जी ने यंग इंडिया में सरला देवी के स्वदेशी कपडो के प्रयोग की प्रशंसा करते हुए लिखा हैं खादी के प्रचार में सरला देवी चौधरानी का योगदान सराहनीय हैं। पंजाब में भाषण देते हुए देवी चौधरानी ने खद्दर की साड़ी पहनी हुई थी। जबकि पहले वे रेशमी साड़ी का प्रयोग करती थी। उन्होने स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग हेतु महिलाओं को प्रेरित करते हुए कहा कि आप लोगो ने जो अपने शरीर पर ये महीन विदेशी दुपट्टे डाले हुए हैं, वे विदेशी उत्पादकों पर निर्भर रहने की आपकी असहाय अवस्था के कारण आप के कंधो पर भारी बोझ के समान है जबकि मेरे खद्दर के कपडों से मुझे इस बात कर स्मरण होता हैं कि मैं बिल्कुल आत्मनिर्भर हुँ।[15] इस तरह अधिकांश महिलाओं ने उसी समय विदेशी वस्त्र छोड़ने का निर्णय लिया। इसके बाद पंजाब में महिलाओं द्वारा स्वदेशी वस्तुओं का निर्माण व प्रयोग बढ़ा।[16]

विदेशी कपड़े/मलमल छोड़कर हाथ का बुना हुआ कपडा पहनना कुछ महिलाओं को भार के समान लगता था और जब बम्बई की कुछ बहनों ने इस संबंध में गाँधी जी से शिकायत की तो गांधी जी ने कहा कि कपडो का भार घटाकर आप लोग अपना भार हलका कर लेंगी तात्पर्य यह हैं कि हमारे देश को इस चीज की आवश्यकता हैं और ऐसे समय आप स्वदेशी का प्रयोग न कर देश विरोधी कार्य कर रही हैं।[17]

चरखा समृद्धि और स्वतंत्रता का प्रतीक

महात्मा गाँधी खादी का आजादी से संबंध बताते हुए कहते हैं कि खादी और चरखे के संबंध में मेरी स्थिति ऐसी है कि यदि कोई मुझे बांधकर मारे तो भी मैं स्वराज्य प्राप्ति के श्रेष्ठ साधन के रुप में चरखे और खादी की ही पुकार करुंगा। जिस प्रकार सूर्य के बिना सौरमण्डल का कोई अर्थ नहीं, जिस प्रकार सेनापति के बिना सेना शव के समान होती हैं, जिस प्रकार रामनाम के बिना सारे कार्य निरर्थक हैं, उसी प्रकार चरखे के बिना स्वराज्य की सभी प्रवृत्तियॉ मिथ्या हैं।[18]

गाँधी जी यंग इंडिया में लिखते हैं कि चरखा सर्वाधिक सहज, सरल, सस्ते और व्यवहारिक ढंग से हमारे आर्थिक कमजोरी की समस्या का समाधान कर सकता हैं। यह राष्ट्र की समृद्धि का और इसीलिए स्वतंत्रता का प्रतीक हैं। यह वाणिज्यिक युद्ध का नहीं, अपितु वाणिज्यिक शांति का प्रतीक हैं।[19]

गाँधी जी के शब्दों में खादी हिन्दुस्तान की समस्त जनता की एकता की, उसकी आर्थिक स्वतंत्रता और समानता की प्रतीक हैं, और जवाहर लाल के काव्यमय शब्दों में कहे तो वह हिन्दुस्तान की आजादी की पोशाक हैं।

गाँधी जी का मानना था कि चरखा उद्योग को अपनाकर ही हिंदुस्तान का उद्धार हो सकता हैं। यदि वर्षा नहीं होती तो फसल सूख जाती हैं, किंतु चरखा तो सतत् फलदायी हैं। चरखे का प्रयोग करते रहने मात्र से वह अन्नपूर्णा बन जायेगा। इसी प्रकार दारु और ताडी की लत भी चरखा के प्रयोग करते रहने से कम होती जाएगी/छूट जाएगी। सब ऐसी प्रतिज्ञा करे की वे हाथकते सूत और हाथ बुनी खादी ही पहने जिससे विदेशी कपड़ो से मुक्ति मिलेगी।[20]

महात्मा गाँधी भारत को राजनीतिक रुप से आत्मनिर्भर बनाने से पहले तथा ब्रिटिश शासन से मुक्ति दिलाने हेतु देश को आर्थिक रुप से आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे। उनका कहना था कि यदि हम तीसरे दर्जे में सफर करते हैं तो इस तरह हम पैसो की बचत कर सकते हैं और इन बचे हुए पैसो से खादी खरीद सकते है इस प्रकार हम देश को व स्वयं को आर्थिक रुप से उठा सकते है।[21]

इसी प्रकार के विचार वे गुण्डुकोलनु में भाषण के दौरान लोगों को स्वदेशी वस्त्र प्रमुख रूप से खद्दर के प्रयोग हेतु प्रेरित करते हुए एक उदाहरण देते हुए कहते हैं के यदि आपके किसी स्वजन और प्रिय व्यक्ति की कैद हो जाये तो क्या आप उसे हर कीमत पर छुडाने का प्रयत्न नहीं करेंगे? इसी तरह यदि आप स्वराज्य प्राप्त करना चाहते हैं तो इसके लिए त्याग की भावना जरूरी हैं। खद्दर को इसी त्याग की भावना के साथ पहनना चाहिए। कई लोंगो का कहना हैं कि खद्दर तों महंगा हैं। यह कहने का मतलब हैं कि आप स्वराज्य बिना कोई मूल्य चुकाये प्राप्त करना चाहते हैं। विदेशी कपडा सस्ता हैं कहने में आपकी दासता की बुराई और आपकी दुर्बलता छिपी हुई हैं। इससे छुटकारा पाना अत्यावश्यक हैं कपडे के मामले में आत्मनिर्भर बनिए। और किसी भी हाल में पैसा अपने देश से बाहर मत जाने दीजिए।[22]

हरिजन में गाँधी जी ने लिखा हैं कि चरखे का आंदोलन लगभग 17 साल से चल रहा हैं और उससे हर साल 1 लाख 20 हजार स्त्रियों को थोड़ी किंतु स्थायी आमदनी हो जाती हैं, तो भी हमारे कार्यकर्ताओं के सही तरीके से कताई करने के ज्ञान में कमी के कारण

आमदनी जितनी होनी चाहिए उतनी नहीं हो पाती।[23] यहां गांधी जी ने कताई की सही विधि के प्रयोग करने की बात कही हैं जिससे सभी बुनाई कर्ता अपनी आय दुगनी कर सके।

पूर्व खानदेश जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष यंग इंडिया के संपादक के नाम पर लिखे पत्र में चरखे के बारे में विवरण करते हुए लिचाते हैं कि जिलाा कांग्रेस कमेंटी के पास ऐसा कोई कताई विशेषज्ञ नहीं हैं जिसकी सलाह से वह जनसाधारण में प्रचार के लिए सही चरखे का चुनाव कर सके। अधिकांश कार्यकर्ता को अब तक यह ज्ञात नहीं हैं कि ऐसे पतले तकुए पर ही जो कि चरखे के एक चक्कर में 150 तकुए पूरे कर लेता हैं ठीक बुने जाने योग्य सूत काता जा सकता हैं।[24] कुछ स्थानों में यंग इंडिया द्वारा सुझाए गए चरखे को आदर्श नमुना माना जाता हैं लेकिन उसके तकुए (जिसका व्यास आमतौर पर कम से कम आधा इंच होता है) के चक्की 40 से भी कम होने का कारण तार खींचने के बाद उसमें पूरे बट डालने के लिए पहिये को ज्यादा बार घुमाना जरूरी हो जाता हैं जिससे उसमें समय ज्यादा लगता हैं। इसके परिणम स्वरूप बहुत से चरखे बेकार पडे रहते हैं अथवा उनसे ऐसा सूत तैयार होता हैं जिसे बुनकर कम बटा या विषय होने के कारण नहीं लेते। यदि समिति तिलक स्वराज्य निधि का अधिकांश भाग इसी काम पर खर्च करने वाली हो तो धन देते समय उसे यह स्वष्ट शर्त रख देनी चाहिए कि जिस जिला संगठन को यह धन दिया जा रहा हैं उसके पास एक ऐसा कताई विशेषज्ञ होना चाहिए।[25]

गाँधी जी लोगो को अधिक से अधिक सूत कातने और उसे कांग्रेस के पास भेजने को कहते हैं जिससे खादी सस्ती हो सके साथ ही सभी लोगो को रोज आधा घंटा सूत कातने को कहते हैं जिससे खादी मुफ्त मिलने लगे।[26]

यंग इण्डिया के एक लेख में वर्णन मिलता हैं कि नेताओं के द्वारा स्वयं सेवको को संगठित करके खादी बेची गई। साथ ही बहुत से नेताओं ने खादी बेचने के लिए फेरिया लगाई। इस प्रकार इलाहाबाद, संयुक्त प्रांत, गाजीपुर, तमिलनाडु में तैयार खादी की बड़ी मात्रा में बिक्री हुई।[27]

गाँधी जी लिखते हैं कि अखिल भारतीय चरखा संघ ने अपने प्रयासो से खादी की सुंदरता, बनावट वगैरह में लगातार प्रगति की हैं। लेकिन जब कार्यकर्ता कच्चे या नौसिखिये कतैयों के पास उनसे सूत तलब करें तब वे कोई खास शर्ते उन पर न लादे। चूंकि नौसिखिये कातने वाले आरंभ में एकदम महीन व एकसार सुत नहीं कात सकते हैं अतः यदि जनता स्वराज्य चाहती हैं, खादी आंदोलन और लाखो भूखों मरने वालों को मदद पहुंचाना चाहती हैं तो उसे खादी आंदोलन के प्रत्येक नये दौर और प्रत्येक नये विकास के मौके पर थोडे समय हेतु मोटी खादी (खद्दर) पहनकर ही संतोष कर लें। विदेशी वस्त्र बहिष्कार को सफल बनाने हेतु भारत के गरीबों की मदद के लिए खद्दर पहनना कोई इतना बडा त्याग तो नहीं हैं।[28]

गाँधी जी ने खादी एवं चरखे को महत्व प्रदान किया तथा हर एक से अपेक्षा की, कि वह चरखा तथा तकली चलायें। इससे स्वावलंबन की भावना उत्पन्न होगी। खादी न केवल आर्थिक संपन्नता का प्रतीक है अपितु यह एक दर्शन है। इससे असंख्य दीनदुखियों एवं गरीबो की सेवा की जा सकती है। कविवर सुमित्रानंदन पंत के शब्दों में

नग्न गात यदि भारत मां का
तो खादी समृद्धि कीरा का
हरो देश की निर्धनता का
तम तम तम
भ्रम भ्रम भ्रम[29]

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य महात्मा गाँधी के खादी उद्योग संबंधी विचारो का अध्ययन व विश्लेषण करते हुए यह ज्ञात करना कि क्या तत्कालीन समय में खादी उद्योग लोगो के रोजगार प्राप्ति का साधन बना तथा क्या इसके द्वारा लोग आत्मनिर्भर हुए ? क्या यह उद्योग भारतीय स्वाधीनता आंदोलन को आगे बढ़ाने में कामयाब रहा ?क्या इस उद्योग के माध्यम से महिलाओं की आत्मनिर्भरता बढ़ी व स्वाधीनता आंदोलन की ओर उनका पदापर्ण हुआ ?साथ ही वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता को ज्ञात करना।

निष्कर्ष

इस प्रकार खादी जहां एक ओर जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने का साधन थी, वहीं दूसरी ओर यह लोगो को स्वावलंबी बनाने का तरीका भी था। खादी उद्योग आलस्य और बेकारी की समस्या का तत्काल और स्थायी हल था। गांधी जी ने खादी को स्वाधीनता आंदोलन से जोडकर इस उद्योग की महत्ता और बढा दी। ब्रिटिश शासन की स्थापना और औद्योगिक कांति के बाद प्राचीन काल से जो भारतीय वस्त्र उद्योग समृद्ध था उस उद्योग पर अब ब्रिटिशों का कब्जा हो गया जिससे धन निष्कासन और बेरोजगारी बढ गई इसे रोकने हेतु गाँधी जी ने खादी उद्योग को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया था। यहां एक अन्य बात महत्वपूर्ण हैं कि गाँधी जी से पूर्व भी कई आंदोलन व आंदोलनकर्ता हुए परंतु विदेशी वस्त्र बहिष्कार आंदोलन के साथ भारतीय वस्त्र उद्योग को बढ़ावा देने का कार्य मात्र गाँधी जी ही सशक्त रूप से कर सके। साथ ही गाँधी जी ने वस्त्र के रूप में अन्य का चयन न कर खादी को ही चुना क्योकि उस निर्मित करने हेतु कपास सर्वत्र भारत में होती थी। गाँधी जी वस्त्र उघोग के क्षेत्र में भारतीयो को आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे ताकि हम आत्मनिर्भर होकर स्वतंत्रता प्राप्त कर सके। साथ ही उन्होने स्त्रियों की स्थिति सुधारने, उन्हे आत्मनिर्भर बनाने और आंदोलन से जोडने का महत्वपूर्ण कार्य इसी खादी के आधार पर किया। खादी, स्वाधीनता आंदोलन का केन्द्र बिंदु रही इस दृष्टि से यह विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार व विदेशी सत्ता की समाप्ति का भी एक प्रमुख हथियार थी। इस तरह खादी मात्र एक वस्त्र न होकर बेरोजगारी मिटाने, आत्मनिर्भर बनने और स्वदेशी वस्त्र के प्रयोग को बढ़ावा देने व विदेशी वस्त्रो के बहिष्कार करने के साथ ही आर्थिक रुप से आत्मनिर्भर होने का एकमात्र प्रमुख साधन थी। खादी स्वाधीनता प्राप्ति का एक कारगर हल

थी। आज वर्तमान समय में भी इसकी प्रासंगिकता हैं तत्कालीन समय में यह जितना महत्वपूर्ण रहा हैं। उतना आज पुनः महत्वपूर्ण होते जा रहा हैं। इसके माध्यम से ही भारत को पहचान मिली। आज सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक हर स्तर पर इसे बढाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. उपाध्याय, हरिभाऊ, स्वतंत्रता की ओर, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, 1961, पृ.– 179
2. गाँधी, महात्मा, मेरे सपनों का भारत, राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2008 पृ.–91
3. उपाध्याय, हरि भाऊ, पूर्वोक्त, पृ.– 180
4. त्रिकम जी, मथुरा दास, गाँधी जी की संक्षिप्त आत्मकथा, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1951, पृ. 183–84
5. सम्पूर्ण गाँधी वाङमय, खण्ड–62, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 1975, पृ. 70
6. सम्पूर्ण गाँधी वाङमय ,खण्ड – 16, पूर्वोक्त, पृ. 131
7. संपूर्ण गाँधी वाड्मय, खण्ड–25, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, 1968, पृ.–45
8. सम्पूर्ण गाँधी वाङमय, खण्ड–40, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृ.–295
9. गाँधी, मोहनदास करमचंद, खादी क्यों और कैसे?, नवजीवन प्रकाशन पृ.– 89
10. गांधी पंचायत, महात्मा गांधी 125वां जन्म समारोह समिति, संस्कृति विभाग, बाणगंगा भोपाल, म.प्र. शासन, 1997 पृ.– 128–29
11. अग्रवाल, अलका, गाँधी दर्शन विविध आयाम, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर (राजस्थान), 1999, पृ. 56–57
12. नेहरू, जवाहर लाल, राष्ट्रपिता, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर (राजस्थान), 1999, पृ.– 91
13. संपूर्ण गाँधी वाड्मय, खण्ड–27, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, 1968, पृ.–2–3
14. उपरोक्त, पृ.–5
15. संपूर्ण गाँधी वाड्मय, खण्ड–18, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, 1966, पृ.–21
16. वही, पृ.–22
17. वही, पृ.–418
18. संपूर्ण गाँधी वाड्मय, खण्ड–28, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, 1968, पृ.–55
19. यंग इंडिया, 8–12–1921, पृ.–406
20. संपूर्ण गाँधी वाड्मय, खण्ड–28, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, 1968, पृ.–23
21. संपूर्ण गाँधी वाड्मय, खण्ड–25, पूर्वोक्त, पृ.–3
22. संपूर्ण गाँधी वाड्मय, खण्ड–40 (फरवरी–मई 1929), पूर्वोक्त,1971, पृ.–291
23. हरिजन, 4–5–1935
24. संपूर्ण गाँधी वाड्मय, खण्ड–18 (दिसम्बर 1921 से मार्च 1922), पूर्वोक्त,1967, पृ.–29
25. वही, पृ.–29
26. संपूर्ण गाँधी वाड्मय, खण्ड–27, पूर्ववत्, पृ.–2–3
27. संपूर्ण गाँधी वाड्मय, खण्ड–25, पूर्ववत्, पृ.–475
28. संपूर्ण गाँधी वाड्मय, खण्ड–40 (फरवरी–मई 1929), पूर्वोक्त,1971, पृ.–410
29. एम.चतुर्वेदी, गाँधी, नेहरू, टैगोर और अम्बेडकर, वोहरा पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद, 2004, पृ.– 37